नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

---

# भाषा,माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि पर तीन दिवसीय कार्यशाला उदघाटित

## शिक्षा विद्यापीठ एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन का आयोजन

## शोध के लिए भारतीय दृष्टि आवश्यक – श्री मुकुल कानिटकर

वर्धा, 5 फरवरी 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शिक्षा विद्यापीठ एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में

भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि विषय पर तीन दिवसीय (5-7) कार्यशाला का शुभारंभ बुधवार को हुआ। इस कार्यक्रम में भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री मुकुल कानिटकर मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। मुख्य अतिथि श्री मुकुल कानिटकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय सिद्धांत काल और देश से परे है। यह सनातन और वैज्ञानिक है। इन्होंने भारतीय शिक्षा की मूल्य आधारित बताया जिसमें विद्यार्थी को केवल जीविका के लिए तैयार नहीं किया जाता बल्कि उसे जिज्ञासु बनाया जाता है। वेदों का संदर्भ लेते हुए इन्होंने

ज्ञान और कौशल का अंतर स्थापित किया और बल दिया कि विद्या मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि जिसे हम आधुनिक शिक्षा कहते हैं वस्तुत: वह भारतीय चिंतन परंपरा और पद्धति के साथ न्यूनतम तालमेल रखती है। आपने भारतीय दार्शनिक चिंतन पद्धति का उदाहरण लेते हुए व्याख्यायित किया कि भारतीय विद्याएं नैतिक मूल्यों की स्थापना करती हैं। वे भाषा के माध्यम से ज्ञान और शोध दोनों को दिशा देती है। प्रो. शुक्ल ने कहा कि हमें भारत केंद्रित शोध के लिए शोध से संबंधित उपकरणों का भारतीयकरण करना चाहिए। उन्होंने भारतीय विद्या को सुख और आनंद का साधन बताते हुए कहा कि शोध के लिए श्रद्धा का होना एक आवश्यक शर्त है। आपने

कार्यशाला के सहभागियों का आहवान किया कि वे शोध को देश काल के अनुरूप बनाने के लिए अपने समाज और संस्कृति का गहन अध्ययन करें। पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत उक्त कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के तुलसी भवन स्थित गालिब सभागार में बुधवार, 5 फरवरी को कार्यशाला का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर भारतीय शिक्षण मंडल के शैक्षणिक प्रकोष्ठ के सह प्रमुख श्री अमित दशौरा, प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट, शिक्षा एवं प्रबंधन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सारिका राय शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने प्रस्तुत किया।

प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री मुकुल कानिटकर का परिचय प्रस्तुत किया। भारतीय शिक्षण मंडल के शैक्षणिक प्रकोष्ठ के सह प्रमुख श्री अमित दशौरा ने सामाजिक विज्ञान की अनुसंधान प्रद्धतियों को प्रतिपादित करते हुए रंगमंच को शोध की भारतीय दृष्टि माना। कार्यक्रम के आरंभ में विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि शोध कार्य का लक्ष्य ज्ञान और कर्म में अंतर को समाप्त करना होना चाहिए। कार्यशाला में विभिन्न विश्वविद्यालय, महाविद्यालय के शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।